केर : मरूस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र की एक बहुउद्देशीय झाड़ी

केर उत्तर पश्चिम भारत के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में, मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तान में पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण अकप्रयोगी फल है। भारत में केर, राजस्थान, हरियाणा, गुजरात और पंजाब राज्यों के बेकार पड़े क्षेत्रों, खेतों के किनारों, गोचर एवं बंजर भूमि पर इसके पौधे प्राकृतिक रूप से पाये जाते हैं। इसे स्थानीय रूप से राजस्थान में कैर, गुजरात में केर, उत्तर प्रदेश में करील, हरियाणा में टींट, दिल्ली एवं पंजाबी में डेल्ला और पश्चिमी महाराष्ट्र में नेप्ती के रूप में जाना जाता है। यह पश्चिमी राजस्थान एवं गुजरात के ग्रामीण इलाकों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इससे मानव जीवन की अनेकों आवश्यकताओं जैसे सब्जी, अचार, लकड़ी, ईंधन इत्यादि की पूर्ति होती है। यह आमतौर पर जैव–बाड़ के रूप में उपयोग किया जाता है, इसकी दीमक प्रतिरोधी लकड़ी का उपयोग ग्रामीण लोग हैंडल, कार्टव्हील और अन्य उद्देश्यों के लिए करते हैं। औषधीय रूप से इसका उपयोग ह्रदय और गैस्ट्रिक परेशानियों के इलाज के लिए किया जाता है।

यह एक झाड़ीदार वनस्पति है जिसकी ऊँचाई 4–5 मीटर तक होती है। फूल गुलाबी, नारंगी और कभी कभी पीले रंग के होते हैं और फल पकने से पहले तक हरे तथा पकने पर लाल व गुलाबी होते हैं और सूखने पर काले हो जाते हैं। यह शुष्क वातावरण में अच्छी तरह से बढ़ता है। केर का कोई व्यवस्थित वृक्षारोपण नहीं है लेकिन शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से बढ़ता हुआ पाया जाता है। इसे बीज, जड़–प्ररोह (रूट सकर) और तने की कलम के माध्यम से प्रवर्धित किया जा सकता है। शुष्क क्षेत्रों में पौधों को जुलाई–सितंबर और फरवरी के दौरान खेत में लगाया जाता है। मिट्टी, चिकनी मिट्टी एवं गोबर खाद का 1: 2: 1 अनुपात का मिश्रण रोपण / स्थापना के लिए सबसे अच्छा होता है। उच्च चिकनी मिट्टी की मात्रा केर स्थापना हेतु बेहतर रहती है। लगभग छह महीने के बीजू पौधों की ऊँचाई 25–30 सेमी और वानस्पतिक रूप (कलम) से प्रवर्धित लगभग 18 महीने पुराने पौधों को 5 X 5 मीटर के अंतर पर खेत में लगाया जाता है। बेहतर बाग स्थापना के लिए प्रारंभिक अवस्था में पौधों को साप्ताहिक सिंचाई दी जानी चाहिए। केर का एक बेहतर जीनोटाइप 'एएचसीडी–1' (आईसी सं.–0634693) को भाकृअनुप–केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीछवाल, बीकानेर से चिन्हित किया गया है, जो पूरी तरह से काँटे रहित है जिससे औसतन 8–10 किग्रा/पौधा अपरिपक्व, मटर के आकार के फल प्राप्त होते हैं। इस प्रकार, इस जीनोटाइप से प्रति हेक्टेयर 30–40 क्विंटल तक अपरिपक्व फलों को तोड़ा जा सकता है।

केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर प्रक्षेत्र पर केर 'एएचसीडी–1' में पुष्पन का दृश्य

केर के अपरिपक्व फलों (मटर के आकार के) की तुड़ाई हाथ से की जाती है। इस प्रकार फल तोड़ने पर अधिक ग्रेडिंग की आवश्यकता नहीं होती है। पौधे काँटेदार होते हैं, इसलिए, फलों का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। फलों की तुड़ाई का मुख्य समय अप्रैल–मई एवं सितम्बर– अक्टूबर होता है। अपरिपक्व फल, कोमल और हरे रंग के होते हैं, तब ये अचार और सब्जी बनाने के लिए उपयोग में लिए जाते हैं। अपरिपक्व फलों का उपयोग तुड़ाई के बाद दो तरह से किया जा सकता है जैसे कि ताजा फल सब्जी बनाने और निर्जलित फल अचार बनाने के लिए। मुख्य रूप से फलों को अच्छी गुणवत्ता का अचार बनाने के लिए संसाधित किया जाता है और राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में एक पारंपरिक स्वादिष्ट सब्जी पंचकुटा में मुख्य घटक के रूप में उपयोग किया जाता है। केर के अपरिपक्व हरे फलों के साथ–साथ गुलाबी / लाल पके फलों का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है।

भाकृअनुप–केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर (राजस्थान)